By - Dr. Shailesh Kumar
dept. of economics
Raja Singh college Siwan

B.A Part one
Paper IIIrd

संतुलन की धारणा
(The concept of equilibrium)

अर्थ (meaning)

equilibrium शब्द लैटिन के equilibrium से निकला हुआ शब्द है जिसका अर्थ समान तुलन है। अर्थशास्त्र में इसका प्रयोग भौतिकी से लिया गया है। भौतिकी में इसका अर्थ समान तुलन की वह स्थिति जिसमें विरोधी शक्तियाँ या प्रवृत्तियाँ एक दूसरे को निष्प्रभाव कर देती हो। प्रो० स्टिगलर ने इसी प्रकार की परिभाषा इन शब्दों में दी है। "संतुलन वह स्थिति है जिसमें गति की कोई प्रवृति न हो, हम कोई प्रवृति इस तथ्य पर बल देने के लिए कहते हैं कि वह स्थिति आवश्यक रूप से आकस्मिक जड़ता की नहीं होती परन्तु इसके स्थान पर बलशाली शक्तियों को निष्प्रभाव करने की होती है" संतुलन का अर्थ यहाँ विश्राम से है।

प्रो० जे०के० मेहता के शब्दों में "अर्थशास्त्र में संतुलन गति में परिवर्तन की अनुपस्थिति बतलाता है। यह ऐसी स्थिति है जिसमें मार्केट के विभिन्न प्रतिभागियों की सभी निर्णयों में पूरी सहमति होती है। और कोई भी अपने निर्णय को दोहराने या बदलने की जरूरत नहीं समझता। दूसरी स्थिति में यह ऐसी मार्केट स्थिति है जहाँ भाग लेने वालों के सभी निर्णय एक दूसरे से मेल खाते हैं।

रिकार्डो के शब्दों में "एक मार्केट या अर्थव्यवस्था, या व्यक्तियों या फर्मों का कोई अन्य समूह उस समय संतुलन की स्थिति में होता है जब उसका कोई भी सदस्य अपने व्यवहार में परिवर्तन की आवश्यकता अनुभव नहीं करता। इसलिए किसी समूह के संतुलन के लिए यह आवश्यक है कि उसके सभी सदस्य संतुलन में हों और प्रत्येक सदस्य का संतुलन व्यवहार हर अन्य सदस्य के संतुलन व्यवहार के अनुरूप हो"

इसे हम एक उदाहरण के द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं। मान लिजिए कि प्रतिदिन मार्केट में मछली की स्थिर मात्रा आती है और संभावी क्रेता उसे उसी चाह में खरीदते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि मार्केट कीमत ऐसी हो जिससे मछली की माँग और पूर्ति समान है, तब तक वह संतुलन की स्थिति है। वह कीमत जीस पर मछली खरीदी और बेची जाती है संतुलन कीमत कहलाती है तथा मछली की वह मात्रा—

P.T.O.

Scanned by CamScanner

जो उस कीमत पर बेची और खरीदी जाती है संतुलन मात्रा कहलाती है। संतुलन कीमत पर क्रेता और विक्रेता में से कोई भी कम या अधिक मात्रा खरीदने या बेचने को प्रेरित नहीं होता।

संतुलन के प्रकार (kinds of equilibrium)

(1) स्थैतिक संतुलन (Static equilibrium)

स्थैतिक संतुलन के बारे में विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने अपने-अपने तरीके से इसके बारे में समझाने का प्रयास किया है, जिसमें सबसे सरलतरीके से प्रो० बोल्डिंग ने परिभाषित किया है जो इस प्रकार है। "एक गेंद जो समान गति से लुढ़कती जा रही हो, या इससे भी अच्छा उदाहरण एक वन का है जिसमें पेड़ उगते हैं, बढ़ते हैं या नष्ट होते हैं परन्तु समूचे वन की संरचना में कोई परिवर्तन नहीं आता, यहाँ संतुलन का यान्त्रिक उदाहरण पाया जा सकता है। यह ऐसा स्थैतिक संतुलन है जो दी हुई तथा निश्चित किमतों, मात्राओं, आय, रुचियों, प्रौद्योगिकी और जनसंख्या पर आधारित है।

(2) प्रावैगिक संतुलन (Dynamic equilibrium)

प्रो० मेहता ने कहा है कि एक निश्चित अवधि के बाद जब संतुलन की अवस्था भंग हो जाती है तो वह प्रावैगिक संतुलन कहलाता है। अर्थात प्रावैगिक संतुलन में कीमतें, मात्राएं, आय, रुचियाँ, प्रौद्योगिकी, जनसंख्या आदि सभी लगातार बदलते रहते हैं। इसलिए समय की एक निश्चित अवधि में संतुलन के बजाय असंतुलन की स्थिति पाई जाती है।

(3) तटस्थ संतुलन ~~[illegible]~~ (Neutral equilibrium) प्रो० पीगू के अनुसार "एक अण्डा जो अपनी लंबाई के सहारे पड़ा है, तटस्थ संतुलन में है" जब प्रारंभिक संतुलन की स्थिति में गड़बड़ पैदा होती है तो गड़बड़ पैदा करने वाली शक्तियाँ उसे संतुलन की नई स्थिति में ले आती हैं जहाँ आकर व्यवस्था रुक जाती है।

(4) आंशिक संतुलन (Partial equilibrium) जो एक व्यक्ति आर्थिक-

P.T.O.

विश्लेषण भी कहते हैं। एक व्यक्ति या फर्म या उद्योग या उद्योगों के एक समूह के संतुलन की स्थिति का अध्ययन करता है। यह पूंजी आंशिक प्रक्रिया है जो वस्तु किमतों और साधन किमतों का निर्धारण करती है और जिसमें अन्य बातें सामान्य रहते हुए एक या दो स्तरों पर विचार किया जाता है। स्टिगलर के शब्दों में "आंशिक संतुलन वह है जो केवल सीमित आँकड़ों पर आधारित है। एक आदर्श उदाहरण एक वस्तु की कीमत का विश्लेषण है, जबकि अन्य सभी वस्तुओं की कीमतें स्थिर रखी जाती हैं।"

(5) सामान्य संतुलन (General equilibrium)

सामान्य संतुलन आर्थिक परिवर्तियों, उनके परस्पर संबंधों और निर्भरताओं का विस्तृत अध्ययन करता है, जिससे आर्थिक व्यवस्था के पूर्ण रूप में कार्यकरण को समझा जा सके। यह समस्त अर्थ व्यवस्था के संबंध में किमतों, वस्तुओं की मात्राओं और सेवाओं में परिवर्तनों के कारण और परिणामों को स्पष्ट कर देता है। जैसा कि प्रो० स्टिगलर ने कहा है "सामान्य प्रक्रिया का सिद्धान्त अर्थ व्यवस्था के समस्त भागों के परस्पर संबंध का सिद्धान्त है।

प्रो० लैफ्टविच के शब्दों में "सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था के लिए सामान्य संतुलन तभी हो सकता है, जब सभी आर्थिक इकाईयाँ एक ही साथ अपना आंशिक संतुलन प्राप्त करें।"